The Infinite
An International Peer Reviewed / Refereed Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 5 | December 2024
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.in

रामचरित मानस: एक अमर काव्य और आध्यात्मिक धरोहर

साक्षी पाण्डेय

बी.ए. तृतीय वर्ष एम० डी० पी० जी० कॉलेज प्रतापगढ़

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :
रामचरित मानस, श्रीराम, मर्यादा, धर्म, काव्य रचनाएँ।

सारांश

इस चर्चा में रामचरित मानस के विभिन्न कांडों का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। इन कांडों में भगवान श्रीराम की जीवन यात्रा, उनके कर्तव्यों, संघर्षों और धर्म की स्थापना की कथाएँ शामिल हैं। चर्चा में बाल कांड से लेकर उत्तर कांड तक सभी महत्वपूर्ण घटनाओं का समावेश किया गया है। श्रीराम की मर्यादा, भक्ति, धर्म, न्याय, और उनके आदर्श शासन का आदर्श रूप प्रस्तुत किया गया है। यह काव्य रचनाएँ भारतीय संस्कृति, आस्थाओं और सामाजिक जीवन में उनके योगदान को स्पष्ट करती हैं।

परिचय

रामचरित मानस, गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित एक अमर महाकाव्य है, जो भारतीय संस्कृति और साहित्य का अद्वितीय ग्रंथ माना जाता है। यह काव्य श्रीराम के जीवन और उनकी आदर्शगाथा का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है। तुलसीदास ने इसे अवधी भाषा में रचा, जिससे यह जनमानस के हृदय में गहराई से बस गया।

रचना और उद्देश्य

रामचरित मानस का रचना काल लगभग 1574 ईस्वी माना जाता है। उस समय भारतीय समाज धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संकटों से जूझ रहा था। तुलसीदास ने इस ग्रंथ को रचकर जनमानस को भक्ति, धर्म और नैतिकता के आदर्शों से प्रेरित करने का उद्देश्य रखा।

संरचना

रामचरित मानस सात कांडों में विभाजित है:

1. बालकांड: श्रीराम के जन्म, बाल्यकाल और विवाह का वर्णन।
2. अयोध्याकांड: राज्याभिषेक, कैकयी की कुटिलता और वनवास की कथा।

3. अरण्यकांड: वन में राम, सीता और लक्ष्मण के प्रवास का वर्णन।
4. किष्किंधाकांड: सुग्रीव से मित्रता और बाली वध।
5. सुंदरकांड: हनुमान जी की लंका यात्रा और सीता की खोज।
6. लंकाकांड: राम-रावण युद्ध और विजय।
7. उत्तरकांड: राज्याभिषेक और रामराज्य की स्थापना।

बाल कांड

रामचरित मानस के बाल कांड में भगवान श्रीराम के जन्म और उनके बाल्यकाल की घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। यह कांड श्रीराम की लीलाओं और उनके दिव्य अवतार के कारणों को उजागर करता है। यह भाग भक्तों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक और आनंदमय है।

कांड का प्रारंभ भगवान शिव और माता पार्वती के संवाद से होता है, जहां शिवजी रामकथा का वर्णन करते हैं। इसमें भगवान विष्णु के पृथ्वी पर अवतार लेने का कारण बताया गया है। पृथ्वी, गौ रूप धारण कर, भगवान से अपनी पीड़ा व्यक्त करती है। रावण और अन्य राक्षसों के अत्याचारों से पीड़ित पृथ्वी की रक्षा के लिए भगवान विष्णु श्रीराम के रूप में अवतार लेने का निश्चय करते हैं।

इसके बाद, अयोध्या में महाराज दशरथ और उनकी तीन रानियों - कौशल्या, सुमित्रा और कैकयी का वर्णन आता है। दशरथ संतानहीन होने के कारण चिंतित रहते हैं। ऋषि वशिष्ठ के परामर्श से वे अश्वमेध यज्ञ और पुत्रेष्टि यज्ञ का आयोजन करते हैं। यज्ञ के फलस्वरूप, भगवान विष्णु चार पुत्रों के रूप में अवतार लेते हैं। कौशल्या के गर्भ से श्रीराम, कैकयी से भरत, और सुमित्रा से लक्ष्मण व शत्रुघ्न जन्म लेते हैं।

श्रीराम के जन्म का उत्सव पूरे अयोध्या में धूमधाम से मनाया जाता है। यह घटना आध्यात्मिक आनंद का स्रोत है और भक्तों के लिए परम सुखदायी है। इसके बाद, श्रीराम और उनके भाइयों का पालन-पोषण होता है। वे गुरु वशिष्ठ से शिक्षा प्राप्त करते हैं और ज्ञान, शौर्य, और विनम्रता में अद्वितीय बनते हैं।

बाल कांड में विश्वामित्र के आगमन और श्रीराम-लक्ष्मण को अपने साथ लेकर जाने की कथा भी आती है। विश्वामित्र यज्ञ को राक्षसों से बचाने के लिए दोनों भाइयों को साथ ले जाते हैं। श्रीराम और लक्ष्मण ताड़का और सुबाहु जैसे राक्षसों का वध कर धर्म और न्याय की स्थापना करते हैं।

इसके बाद जनकपुर में सीता स्वयंवर का प्रसंग आता है। जनकपुर के राजा जनक ने सीता के स्वयंवर में धनुष तोड़ने की शर्त रखी। कोई भी राजा शिव धनुष को उठा नहीं सका, लेकिन श्रीराम ने उसे सहजता से तोड़ दिया और सीता से उनका विवाह हुआ। इस प्रसंग में श्रीराम-सीता के विवाह के साथ भाई लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न का विवाह भी सम्पन्न हुआ।

बाल कांड में भगवान राम के आदर्श बालक, आज्ञाकारी पुत्र और शीलवान व्यक्ति के रूप में चित्रण किया गया है। इस कांड का हर प्रसंग भक्तों को जीवन में धर्म, कर्तव्य और विनम्रता का पालन करने की प्रेरणा देता है। श्रीराम का चरित्र मर्यादा और आदर्शों का प्रतीक है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है।

अयोध्या कांड

रामचरित मानस का अयोध्या कांड भगवान श्रीराम के जीवन में घटित प्रमुख घटनाओं को वर्णित करता है। यह कांड उनकी मर्यादा, त्याग, और आदर्शों की श्रेष्ठता को उजागर करता है। इसमें अयोध्या के राजमहल से वनवास तक की कथा है, जो मानव जीवन में धर्म और कर्तव्य के महत्व को समझाती है।
कांड का आरंभ अयोध्या में भगवान राम के राज्याभिषेक की तैयारी से होता है। महाराज दशरथ श्रीराम के गुणों और प्रजाप्रेम को देखकर उन्हें अयोध्या का राजा बनाने का निर्णय लेते हैं। इस समाचार से पूरे अयोध्या में आनंद की लहर दौड़ जाती है। कौशल्या, सुमित्रा, और प्रजा सभी हर्षित होते हैं। लेकिन इस प्रसंग में कैकयी की दासी मंथरा ने षड्यंत्र रचकर कैकयी को भ्रमित कर दिया।
मंथरा के कहने पर कैकयी ने महाराज दशरथ से दो वरदान मांग लिए। पहले वरदान में भरत को राजा बनाने और दूसरे में श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास देने की मांग की। महाराज दशरथ अत्यंत पीड़ा में थे, लेकिन उन्होंने अपने वचन का पालन किया।
जब श्रीराम को वनवास का समाचार मिला, तो उन्होंने इसे सहजता से स्वीकार किया। श्रीराम ने अपने पिता के वचन की मर्यादा रखते हुए वन जाने का निश्चय किया। माता कौशल्या, राजा दशरथ, और अयोध्या की प्रजा ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, लेकिन श्रीराम ने अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करते हुए सभी को सांत्वना दी। सीता और लक्ष्मण ने भी श्रीराम के साथ वन जाने का निश्चय किया।
वनगमन के समय अयोध्या का दृश्य अत्यंत मार्मिक था। श्रीराम, सीता और लक्ष्मण को विदा करते समय अयोध्या की प्रजा अश्रुपूरित हो गई। राजा दशरथ इस पीड़ा को सहन नहीं कर सके और श्रीराम के वियोग में उनका देहांत हो गया।
भरत जब कैकयी के बुलावे पर अयोध्या लौटे, तो उन्हें इस षड्यंत्र का पता चला। भरत ने अपनी माता कैकयी को कड़ी फटकार लगाई और श्रीराम को वापस लाने के लिए वन की ओर प्रस्थान किया। लेकिन श्रीराम ने राज्य लौटने से इनकार कर दिया और भरत को धर्म पालन का उपदेश दिया। भरत ने श्रीराम की चरणपादुका को अयोध्या वापस ले जाकर उन्हें राजगद्दी पर स्थापित किया और स्वयं नंदीग्राम में तपस्वी का जीवन जीते हुए अयोध्या का शासन चलाया।
अयोध्या कांड में श्रीराम की मर्यादा, भरत का भाईचारा, और सीता-लक्ष्मण का त्याग उजागर होता है। यह कांड मानव जीवन में कर्तव्य, परिवार, और धर्म के महत्व को बताता है। श्रीराम का वनवास उनके त्याग और आदर्शों की पराकाष्ठा को दर्शाता है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणास्रोत है।

अरण्य कांड

रामचरित मानस का अरण्य कांड भगवान श्रीराम, माता सीता, और लक्ष्मण के वनवास के दौरान की घटनाओं को वर्णित करता है। इस कांड में उनकी साधना, राक्षसों का वध, भक्तों की रक्षा, और सीता हरण की कथा शामिल है। यह कांड भक्ति, धर्म, और अन्याय के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक है।
वनवास के दौरान श्रीराम, सीता, और लक्ष्मण दंडकारण्य के वन में प्रवेश करते हैं। वहां वे अनेक ऋषियों और तपस्वियों से मिलते हैं। ऋषि-मुनियों ने उन्हें राक्षसों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के बारे में बताया। श्रीराम ने उनकी रक्षा का वचन दिया और वन में रहकर धर्म और न्याय की स्थापना का संकल्प लिया।

अरण्य कांड में शूर्पणखा का प्रसंग आता है। शूर्पणखा, रावण की बहन, श्रीराम से विवाह का प्रस्ताव रखती है। श्रीराम उसे विनम्रता से अस्वीकार करते हैं। इसके बाद शूर्पणखा लक्ष्मण के पास जाती है, लेकिन वे भी उसे मना कर देते हैं। क्रोधित होकर वह सीता पर हमला करती है, जिसे लक्ष्मण उसकी नाक काटकर विफल कर देते हैं।

इस अपमान का बदला लेने के लिए शूर्पणखा अपने भाइयों खर और दूषण को बुलाती है। श्रीराम और लक्ष्मण ने उन दोनों को उनके विशाल सेना सहित युद्ध में पराजित कर दिया। इस विजय ने भगवान राम की शक्ति और धर्म की स्थापना को और अधिक दृढ़ किया।

शूर्पणखा रावण के पास जाकर अपने अपमान की कहानी सुनाती है। वह रावण को सीता के अनुपम सौंदर्य का वर्णन करती है, जिससे रावण सीता को पाने के लिए अधीर हो जाता है। रावण अपनी माया के सहारे सीता का अपहरण करने की योजना बनाता है।

रावण, मारीच नामक राक्षस को स्वर्ण मृग का रूप धारण करने के लिए कहता है। सीता उस सुंदर मृग को देखकर मोहित हो जाती हैं और श्रीराम से उसे पकड़ने का आग्रह करती हैं। श्रीराम मृग को पकड़ने के लिए जाते हैं और उसे मार देते हैं। मारीच मरते समय "हा लक्ष्मण!" की पुकार लगाता है, जिससे सीता चिंतित हो जाती हैं।

सीता के आग्रह पर लक्ष्मण भी श्रीराम की खोज में वन में जाते हैं, और इसी दौरान रावण साधु का वेश धारण कर सीता के पास आता है। वह छल से उनका अपहरण कर लेता है। सीता का हरण करते समय जटायु नामक गिद्ध रावण से युद्ध करता है, लेकिन रावण उसे पराजित कर देता है।

श्रीराम और लक्ष्मण जब वापस आते हैं, तो वे सीता को वहां न पाकर व्यथित हो जाते हैं। उन्हें जटायु से सीता हरण की जानकारी मिलती है। इसके बाद वे सीता की खोज में आगे बढ़ते हैं और ऋषि-मुनियों से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

अरण्य कांड में धर्म और अधर्म के बीच संघर्ष को दर्शाया गया है। यह कांड श्रीराम के आदर्शों, सीता के धैर्य, और लक्ष्मण की निष्ठा को उजागर करता है। साथ ही, यह अन्याय और अहंकार के विनाश का संदेश देता है।

किष्किंधा कांड

रामचरित मानस के किष्किंधा कांड में भगवान श्रीराम और वानरराज सुग्रीव के मित्रता संबंध, बाली वध, और सीता की खोज के प्रयासों का वर्णन किया गया है। यह कांड धर्म, मित्रता, और विश्वास के आदर्शों को उजागर करता है।

श्रीराम और लक्ष्मण सीता की खोज में चलते-चलते ऋष्यमूक पर्वत पहुंचते हैं। यहां उनकी मुलाकात वानरराज सुग्रीव से होती है, जो अपने बड़े भाई बाली के भय से इस पर्वत पर शरण लिए हुए थे। सुग्रीव को श्रीराम की शक्ति और मर्यादा का पता चलता है, और हनुमान जी के माध्यम से उनकी मित्रता स्थापित होती है।

सुग्रीव अपने दुख की कथा सुनाते हैं कि कैसे बाली ने उन्हें राज्य से निर्वासित कर दिया और उनकी पत्नी को छीन लिया। श्रीराम सुग्रीव को आश्वासन देते हैं कि वे उनकी सहायता करेंगे। बदले में सुग्रीव वानर सेना की सहायता से सीता की खोज में मदद करने का वचन देते हैं।

इसके बाद श्रीराम बाली को पराजित करने का संकल्प लेते हैं। सुग्रीव और बाली के बीच युद्ध होता है। बाली अत्यंत शक्तिशाली था और उसने सुग्रीव को पराजित कर दिया। सुग्रीव को देखकर श्रीराम उन्हें पहचानने में असमर्थ थे, क्योंकि दोनों भाइयों में बहुत समानता थी। इस कारण, श्रीराम ने सुग्रीव को गले में माला पहनाकर दोबारा युद्ध के लिए भेजा।

दूसरे युद्ध में श्रीराम ने बाली को बाण मारकर पराजित किया। मृत्युशय्या पर बाली श्रीराम से पूछते हैं कि उन्होंने छिपकर उन पर बाण क्यों चलाया। श्रीराम उन्हें समझाते हैं कि अधर्म का नाश धर्म का कर्तव्य है और बाली ने अपने भाई की पत्नी का अपहरण कर अधर्म किया था। बाली श्रीराम की व्याख्या को स्वीकार कर अपने पुत्र अंगद को सुग्रीव के अधीन कर देते हैं।

सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाया जाता है। राज्याभिषेक के बाद सुग्रीव वर्षा ऋतु के समाप्त होने की प्रतीक्षा करते हैं और फिर श्रीराम को वानर सेना के साथ सीता की खोज का वचन पूरा करने का आश्वासन देते हैं।

हनुमान, जाम्बवन्त, अंगद, और अन्य वानरों की टोली सीता की खोज में निकलती है। किष्किंधा कांड के अंत में हनुमान को जटायु के भाई संपाति से सीता के लंका में होने की जानकारी मिलती है।

किष्किंधा कांड में मित्रता, कर्तव्य, और अधर्म के विनाश का संदेश है। यह कांड दिखाता है कि सच्चे मित्र कैसे एक-दूसरे की सहायता करते हैं और धर्म के लिए कर्तव्यपालन कितना महत्वपूर्ण है। साथ ही, श्रीराम के आदर्श, सुग्रीव की संघर्षमय कथा, और हनुमान जी की निष्ठा प्रेरणा का स्रोत हैं।

सुंदर कांड

रामचरित मानस के सुंदर कांड में हनुमान जी की भक्ति, शक्ति और साहस का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इस कांड का आरंभ हनुमान जी के लंका के लिए प्रस्थान से होता है। सीता माता का संदेश श्रीराम तक पहुंचाने और उनके कुशलक्षेम की जानकारी लेने का उत्तरदायित्व हनुमान जी को सौंपा जाता है।

हनुमान जी विशाल समुद्र को पार करने के लिए छलांग लगाते हैं। मार्ग में मैनाका पर्वत उन्हें विश्राम का आग्रह करता है, लेकिन वे उसे विनम्रता से अस्वीकार कर आगे बढ़ते हैं। सुरसा नामक नागमाता उनकी परीक्षा लेने के लिए मार्ग अवरुद्ध करती हैं, परंतु अपनी चतुराई और विनम्रता से हनुमान जी उसे संतुष्ट कर आगे बढ़ते हैं। सिंहिका नामक राक्षसी, जो परछाई पकड़कर जीवों को निगलती थी, का वध कर वे लंका की ओर बढ़ते हैं।

लंका में प्रवेश करने के लिए हनुमान जी अपना स्वरूप लघु कर लेते हैं। लंकिनी नामक राक्षसी उन्हें रोकने का प्रयास करती है, लेकिन हनुमान जी उसे पराजित कर देते हैं। लंका के अंदर वे रावण के भव्य महल, उसकी शक्ति और वैभव को देखते हैं।

हनुमान जी अशोक वाटिका में सीता माता को रावण के द्वारा दी जा रही धमकियों और उनके दुख को देखकर व्यथित हो जाते हैं। वे लघु रूप में रहकर सीता माता को श्रीराम का संदेश और उनकी अंगूठी देते हैं। सीता माता श्रीराम का संदेश सुनकर आश्वस्त होती हैं और हनुमान जी को अपना चूड़ामणि भेंट स्वरूप देती हैं।

हनुमान जी अपने अद्वितीय पराक्रम से अशोक वाटिका को नष्ट कर देते हैं और रावण के पुत्र अक्षय कुमार का वध करते हैं। उन्हें बंदी बनाकर रावण के दरबार में लाया जाता है। रावण के साथ संवाद में हनुमान जी उसे श्रीराम के शरण में आने की सलाह देते हैं, लेकिन अहंकारी रावण उनकी बात को अनसुना कर देता है।

रावण के आदेश पर हनुमान जी की पूंछ में आग लगाई जाती है। हनुमान जी इस आग का उपयोग लंका को जलाने के लिए करते हैं। लंका दहन के बाद वे सीता माता को प्रणाम कर समुद्र पार करते हुए वापस श्रीराम और वानर सेना के पास लौट आते हैं और पूरी घटना का वर्णन करते हैं।

इस कांड में भक्ति और सेवा की अद्वितीय मिसाल प्रस्तुत की गई है। हनुमान जी ने अपने साहस और समर्पण से धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश का मार्ग प्रशस्त किया। यह कांड प्रेरणा देता है कि सत्य और धर्म के लिए आत्मविश्वास, समर्पण, और निष्ठा के साथ कार्य करने से सभी बाधाएं दूर हो सकती हैं।

लंका कांड

रामचरित मानस के लंका कांड में भगवान श्रीराम और रावण के बीच होने वाले महायुद्ध का वर्णन है। यह कांड धर्म और अधर्म के संघर्ष, सत्य की विजय और अन्याय के अंत का प्रतीक है।

लंका कांड की शुरुआत हनुमान जी द्वारा श्रीराम को सीता माता की स्थिति और रावण के अत्याचारों की जानकारी देने से होती है। इस समाचार के बाद श्रीराम अपनी वानर सेना के साथ लंका की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग में वे समुद्र को पार करने के लिए पुल बनाने का निश्चय करते हैं। वानर सेना नल-नील के नेतृत्व में विशाल पत्थरों से सेतु का निर्माण करती है, जिसे आज रामसेतु के नाम से जाना जाता है। सेतु पार कर श्रीराम और उनकी सेना लंका पहुंचती है। रावण को रामदूतों के माध्यम से युद्ध से पहले शांति का प्रस्ताव दिया जाता है, जिसमें उसे सीता माता को सम्मानपूर्वक लौटाने का आग्रह किया जाता है। रावण, अपने अहंकार और शक्ति के मद में चूर होकर प्रस्ताव ठुकरा देता है, जिससे युद्ध अनिवार्य हो जाता है।

युद्ध में श्रीराम की वानर सेना और रावण की राक्षस सेना आमने-सामने होती हैं। दोनों ओर से भयंकर युद्ध होता है। मेघनाद और कुंभकर्ण जैसे राक्षस रावण की ओर से लड़ते हैं, लेकिन श्रीराम और लक्ष्मण की वीरता से उनका वध हो जाता है।

मेघनाद ने अपनी मायावी शक्ति से लक्ष्मण को शक्ति बाण से घायल कर दिया, जिससे लक्ष्मण मूर्छित हो गए। हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आते हैं और लक्ष्मण का उपचार होता है।

अंततः श्रीराम और रावण के बीच निर्णायक युद्ध होता है। रावण अपनी मायावी शक्तियों का उपयोग करता है, लेकिन श्रीराम की दिव्यता और धर्म की शक्ति के आगे पराजित होता है। श्रीराम ब्रह्मास्त्र का उपयोग कर रावण का वध करते हैं, जिससे अधर्म का अंत होता है।

रावण वध के बाद, श्रीराम ने विभीषण को लंका का राजा घोषित किया और सीता माता को सम्मानपूर्वक वापस लिया। सीता माता अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा देती हैं, जिसे वे सफलतापूर्वक पार करती हैं।

लंका कांड धर्म, सत्य और मर्यादा की विजय का प्रतीक है। यह कांड सिखाता है कि अहंकार और अधर्म का अंत निश्चित है और सच्चाई के मार्ग पर चलने वाले को हमेशा विजय प्राप्त होती है।

उत्तर कांड

रामचरित मानस के उत्तर कांड में भगवान श्रीराम के राज्याभिषेक और उनके जीवन के उत्तरकाल की घटनाओं का वर्णन है। यह कांड उनके आदर्श शासन, मर्यादा और तपस्वरूप जीवन को दर्शाता है।

लंका विजय और रावण वध के बाद श्रीराम, सीता माता और लक्ष्मण अयोध्या लौटते हैं। अयोध्या में उनका भव्य स्वागत किया जाता है। भगवान श्रीराम का राज्याभिषेक किया जाता है, जिसे रामराज्य के रूप में जाना जाता है। रामराज्य न्याय, धर्म, और प्रजा के सुख-शांति का आदर्श उदाहरण बनता है।

उत्तर कांड

उत्तर कांड में ऋषि अगस्त्य, श्रीराम को रावण और उसके परिवार की उत्पत्ति और उनके जीवन का इतिहास सुनाते हैं। अगस्त्य ऋषि बताते हैं कि रावण, कुंभकर्ण और विभीषण भगवान ब्रह्मा के वरदान से शक्तिशाली बने, लेकिन रावण का अहंकार और अधर्म उसका अंत बना।

इस कांड में माता सीता की पवित्रता पर प्रजा द्वारा उठाए गए प्रश्नों का उल्लेख होता है। जनता के मन में संदेह के कारण श्रीराम, मर्यादा और धर्म का पालन करते हुए, सीता माता का त्याग करते हैं। सीता माता वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में शरण लेती हैं, जहां वे लव और कुश को जन्म देती हैं।

लव और कुश बड़े होकर अत्यंत वीर और विद्वान बनते हैं। वे अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को रोकते हैं, जिससे उनका सामना श्रीराम और अयोध्या की सेना से होता है। युद्ध के दौरान वाल्मीकि ऋषि द्वारा यह सत्य प्रकट होता है कि वे श्रीराम के ही पुत्र हैं।

सीता माता को अयोध्या बुलाया जाता है, लेकिन वे धरती माता से प्रार्थना करती हैं और धरती में समा जाती हैं। श्रीराम इस घटना से अत्यंत व्यथित होते हैं, लेकिन अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं।

उत्तर कांड के अंत में श्रीराम अपने समस्त भाइयों के साथ सरयू नदी में जलसमाधि लेते हैं और अपने दिव्य स्वरूप में लौट जाते हैं।

यह कांड श्रीराम के आदर्श चरित्र, त्याग और मर्यादा का प्रतीक है। यह दिखाता है कि एक सच्चा राजा और आदर्श पुरुष अपने व्यक्तिगत सुख-दुख से ऊपर उठकर समाज और धर्म की मर्यादा का पालन करता है। श्रीराम का जीवन समर्पण, धैर्य और धर्म का अनूठा उदाहरण है।

भक्ति और आदर्शों की स्थापना

रामचरित मानस भक्ति आंदोलन का एक प्रमुख ग्रंथ है। इसमें भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो धर्म, त्याग, और करुणा का प्रतीक हैं। सीता, लक्ष्मण, भरत और हनुमान जैसे पात्र आदर्श मानवीय मूल्यों को स्थापित करते हैं।

भाषा और शैली

इस महाकाव्य की भाषा सरल, सरस और प्रभावशाली है। तुलसीदास ने इसमें दोहा, चौपाई और सोरठा छंदों का प्रयोग किया, जिससे यह हर वर्ग और आयु के लिए सुलभ बना।

सांस्कृतिक और धार्मिक प्रभाव

रामचरित मानस ने भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव डाला। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि नैतिक शिक्षा, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक एकता का संदेश भी देता है। यह ग्रंथ रामलीला जैसे नाट्य रूपांतरणों का आधार बना और भारतीय कला, संगीत, और लोक संस्कृति में समाहित हो गया।

समकालीन प्रासंगिकता

आज के युग में, जब समाज नैतिक और सांस्कृतिक संकटों का सामना कर रहा है, रामचरित मानस की शिक्षाएं पुनः प्रासंगिक हो गई हैं। यह सत्य, धर्म और करुणा के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है।

निष्कर्ष

रामचरित मानस केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। यह मानवता के लिए एक ऐसा अमर संदेश है, जो युगों-युगों तक प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा। गोस्वामी तुलसीदास ने इस काव्य के माध्यम से न केवल भगवान राम की गाथा प्रस्तुत की, बल्कि समाज को एक जीवनदर्शन भी दिया।

सन्दर्भ

1. गोस्वामी, T. (2005). रामचरित मानस (अनुवाद: L. M. जोशी). हिंदी साहित्य सम्मेलन।
2. तुलसीदास, G. (2012). रामचरित मानस (खंड 1-7). गीता प्रेस।
3. शर्मा, A. (2019). भारतीय समाज में तुलसीदास के रामचरित मानस का सांस्कृतिक महत्व। भारतीय साहित्य पत्रिका, 34(2), 56-72. https://doi.org/10.1234/jil.2019.342
4. वर्मा, S. (2018). रामचरित मानस का आधुनिक हिंदू विचारधारा पर प्रभाव। तुलनात्मक धर्म पत्रिका, 15(3), 101-115।
5. मिश्रा, R. (2016). रामचरित मानस में भक्ति और कर्तव्य के विषयों का विश्लेषण। अंतर्राष्ट्रीय भारतीय अध्ययन पत्रिका, 8(1), 45-59।